Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तराखण्ड

जुनियर असिस्टेंट

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

भाग - 1

सामान्य हिन्दी और तर्कशक्ति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	हिंदी भाषा का परिचय	1
2	वर्णमाला	8
3	वर्तनी शुद्धि	12
4	संज्ञा	17
5	सर्वनाम	19
6	विशेषण	21
7	क्रिया	24
8	संधि	27
9	समास	39
10	उपसर्ग	49
11	प्रत्यय	53
12	तत्सम व तद्भव शब्द	58
13	अव्यय एवं अविकारी शब्द	63
14	वाक्य एवं वाक्य प्रकार	67
15	वाक्य रचना	72
16	शब्द युग्म	76
17	विलोम शब्द	84
18	पर्यायवाची शब्द	90
19	अनेकार्थी शब्द	95
20	मुहावरे	99
21	लोकोक्तियाँ	107
22	अलंकार	114
23	पत्र लेखन	118

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	हिन्दी में प्रमुख रचनाएँ	135
25	अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण	140
26	संख्या और अक्षर श्रृंखला परीक्षण	143
27	कोडिंग एवं डिकोडिंग	150
28	सादृश्यता परीक्षण	155
29	वर्गीकरण परीक्षण	160
30	असमानता	165
31	दिशा और दूरी	170
32	क्रम एवं स्थान परीक्षण	175
33	बैठक व्यवस्था	179
34	रक्त संबंध	188
35	घड़ी	191
36	कैलेंडर	194
37	पहेली परीक्षण	197
38	वेन आरेख	207
39	आकृतियों का निर्माण	211
40	आकृतियों की गिनती	214
41	आकृति पूर्ण करना	219
42	दर्पण प्रतिबिंब और जल प्रतिबिंब	221
43	कथन और तर्क	224
44	कथन और निष्कर्ष	229
45	कथन एवं कार्यवाहियाँ	233

1 CHAPTER हिन्दी भाषा का परिचय

भाषा क्या हैं?

- **भाषा शब्द** संस्कृत के **"भाष"** धातु से निर्मित हैं, जिसका अर्थ होता हैं - **बोलना या कहना ।**
- सामान्य रूप से कहा जाए तो **भाषा** का संबंध जीवों को अपने **विचार और भावों** को व्यक्त करने का एक माध्यम होती हैं । अत: **भाषा** का साधारण अर्थ हैं - **अभिव्यक्ति और अपनाया गया बाध्यत: ।**
- मनुष्य स्वभावत: अपने विचार दूसरों पर प्रकट करना चाहता हैं और उसके लिए वह जिस माध्यम को अपनाता है वह **भाषा** कहलाती हैं । इस प्रकार **भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम** हैं ।

पंतजलि के अनुसार, "जो वाणी वर्णों मे व्यक्त होती हैं,उसे भाषा कहते हैं ।"

डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से नि:सृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि हैं जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके ।"

कामताप्रसाद गुरु के अनुसार,"भाषा वह साधन हैं, जिससे मनुष्य अपने विचार दूसरों के साथ भली भांति प्रकट कर सकता हैं और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ सकता हैं ।"

हिन्दी भाषा की व्युत्पति:

हिन्दी भाषा की व्युत्पति या जन्म 1000 ई. के आसपास माना जाता हैं जबकि साहित्य के रूप मे हिन्दी भाषा की शुरुआत लगभग 1150 ई. के लगभग से मानी जाती हैं ।

हिन्दी भाषा की व्युत्पति को निम्नलिखित टेबल के माध्यम से समझा जा सकता हैं -

काल / चरण	**बोलियाँ / भाषाएँ**	**उदाहरण / आगे का विकास**
वैदिक संस्कृत काल	3 बोलियाँ – पश्चिमोत्तरी, मध्यवर्ती, पूर्वी	—
पाली काल	4 बोलियाँ – पश्चिमोत्तरी, मध्यवर्ती, पूर्वी, **दक्षिणी**	—
प्राकृत काल	6–7 बोलियाँ – ब्राचड, केकय, टक्क, शौरसेनी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी	प्राकृत साहित्य
अपभ्रंश काल	6–7 अपभ्रंश – ब्राचड, केकय, टक्क, शौरसेनी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी	—
आधुनिक भाषाओं का उद्भव	➢ ब्राचड → **सिंधी** ➢ केकय → **लहंदा** ➢ टक्क → **पंजाबी** ➢ शौरसेनी → **गुजराती, राजस्थानी, पश्चिमी हिंदी, पहाड़ी** ➢ महाराष्ट्री → **मराठी** ➢ अर्धमागधी → **पूर्वी हिंदी** ➢ मागधी → **बिहारी, बंगला, असमी, उड़िया**	लगभग 1000 ई. के आसपास हिंदी का जन्म
हिंदी साहित्य का आरंभ	हिंदी का साहित्यिक प्रयोग	लगभग **1150 ई.** से (जैसे अपभ्रंश कवियों में)

- उपरोक्त तालिका के आधार पर, **हिन्दी भाषा का उद्भव** मुख्यत: **शौरसेनी, अर्धमागधी और मागधी अपभ्रंशों** से लगभग **1000 ई. के आसपास** माना जाता है।

संस्कृत → पाली → प्राकृत → अपभ्रंश → हिन्दी

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

याद करने योग्य बातें:

1. हिन्दी भाषा के ठीक पहले अपभ्रंश भाषा का उपयोग मे थी ।
2. हिन्दी भाषा को **देवनागरी लिपि** मे लिखा जाता हैं ।
3. डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार हिन्दी भाषा का संबंध **शौरसेनी अपभ्रंश** से मानते हैं ।
4. भाषा के लिए **हिन्दी शब्द का प्राचीनतम् प्रयोग शरफुद्दीन के ज़फ़रनामा (1424 ई.)** में मिलता है।
5. अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के मध्य का समय **संक्रान्ति काल** कहा गया है।
6. **चन्द्रघर शर्मा गुलेरी ने राजा मुंज को पुरानी हिन्दी का प्रथम कवि माना है।**
7. **अपभ्रंश** को रामचन्द्र शुक्ल ने प्राकृतभाषा तथा चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने **पुरानी हिन्दी** कहा है।
8. अपभ्रंश की उत्तरकालीन अवस्था 'अवहट्ट' के नाम से जानी जाती है। अवहट्ट में विद्यापति ने कीर्तिलता और कीर्तिपताका की रचना की है।
9. 'दोहा' (दूहा) मूलतः अपभ्रंश भाषा का ही छन्द है।

हिन्दी भाषा का नामकरण

- **5 वीं -6 वीं शताब्दी: अरब और फारस** के व्यक्ति भारत को **"हिन्द"** कहते थे और यहाँ पर प्रचलित भाषा को **"जबाने हिन्द"** (हिन्द की भाषा) कहते थे ।
  - ✓ यही कारण रहा हैं कि संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषा को हिन्दी की संज्ञा दी जाती हैं ।
- **अल्बरूनी (11वीं शताब्दी)**, **औफी (13वीं शताब्दी)**, **अमीर खुसरो (13–14वीं शताब्दी)** ने भी "हिंदी" शब्द का प्रयोग सभी भारतीय भाषाओं के लिए किया।
- **13 - 14 वीं शताब्दी:** विभिन्न आधुनिक आर्य भाषाओं (राजस्थानी, गुजराती, मैथलीं, मराठी इत्यादि) के विकास के बाद भी सामान्य नाम **हिन्दी**/ **हिंदवी**/ **हिन्दुस्तानी** प्रचलन मे रहा हैं ।
  a. बाबर के द्वारा - हिंदुस्तानी
  b. मालिक मोहम्मद जायसी के द्वारा - हिंदवी
- वर्तमान मे प्रचलित "हिंदी" शब्द मुख्यतः **खड़ी बोली हिंदी** के लिए प्रयुक्त होता है। परंतु ऐतिहासिक दृष्टि से हिंदी में **ब्रज, अवधी, राजस्थानी, मैथिली, बिहारी, पूर्वी-पश्चिमी हिंदी** की सभी बोलियाँ और उनका साहित्य शामिल है।

साहित्यिक रूप से हिन्दी:

- साहित्य में हिंदी का प्रमुख रूप **ब्रजभाषा** रहा, जो लंबे समय तक काव्य की भाषा बनी रही।
- **अवधी** भी साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त हुई (अर्ध-शौरसेनी + अर्ध-मागधी आधार)। **खड़ी बोली** का विकास भी अर्ध-शौरसेनी प्राकृत से हुआ।
- प्राचीन साहित्य में मराठी, राजस्थानी, मैथिली आदि भाषाओं को भी "हिंदी" कहा गया (जैसे मराठी हिंदी, राजस्थानी हिंदी, मैथिली हिंदी।

हिन्दी एकता के 4 सूत्र हैं -

1. **भाषा वैज्ञानिक सूत्र** – शौरसेनी अपभ्रंश से निकली बोलियाँ।
2. **लिपि सूत्र** – सभी का आधार **देवनागरी लिपि**।
3. **भौगोलिक सूत्र** – मध्यप्रदेश (राजस्थान-पंजाब सीमा से लेकर बिहार तक, और उत्तर से मध्यप्रदेश तक)।
4. **सांस्कृतिक सूत्र** – दार्शनिक मान्यताओं, धार्मिक विश्वासों, सांस्कृतिक चेतना और आपसी आत्मीयता से जुड़ाव।

भारतीय आर्य भाषाएँ:

हिन्दी भारोपीय परिवार के अन्तर्गत आने वाली आर्य भाषा है। आर्य भाषा काल वो अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ इस प्रकार हैं-

- प्राचीन आर्य भाषा-संस्कृत।
- मध्यकालीन आर्य भाषाएँ- पाली, प्राकृत, अपभ्रंश।
- आधुनिककालीन आर्य भाषाएँ है – हिन्दी, पजाबी, मराठी, बंगला, सिन्धी, गुजराती, उड़िया, असमिया।

भारतीय आर्य भाषाओं का **मूल संस्कृत भाषा** है। संस्कृत से हिंदी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बांग्ला, ओड़िया, असमिया, सिंधी, लहंदा, नेपाली और सिंहली जैसी भाषाएँ विकसित हुईं। यूरोप की लैटिन, ग्रीक, जर्मन आदि भाषाओं में भी संस्कृत से समानता मिलती है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन सबका एक ही मूल स्रोत है।

भारतीय आर्य भाषाओं के युग

भारतीय आर्य भाषाओं के विकास को तीन युगों में बाँटा जाता है।

1. **प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ (1500 ई.पू. – 500 ई.पू.) :** इस काल में वैदिक संस्कृत और उसके बाद लौकिक संस्कृत का प्रयोग हुआ।
   - ✓ **वैदिक संस्कृत:** वैदिक संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा मानी जाती है। इसमें वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद रचे गए। 'वेद' का अर्थ है "सत्य को जानने का साधन। वैदिक संस्कृत स्वर-प्रधान भाषा थी। इसकी रूप-संरचना जटिल और विविध थी तथा कृदन्तों का प्रयोग विश्लेषणात्मक रूप में मिलता है।
   - ✓ **लौकिक संस्कृत:** लौकिक संस्कृत ई.पू. 500 के बाद विकसित हुई। इस भाषा में इतिहास, पुराण, कथा साहित्य, काव्य, नाटक, व्याकरण, छंद, काव्यशास्त्र, दर्शन, धर्म, चिकित्सा, गणित और ज्योतिष जैसे विविध विषयों का साहित्य रचा गया। रामायण आदि काव्य है और राष्ट्रीय जीवन का आधार माना जाता है। महाभारत को शतसाहस्त्री संहिता कहा जाता है, जिसमें तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण है। अठारह पुराण रचे गए, जिनमें भागवत पुराण ने आगे चलकर कृष्णभक्ति साहित्य को प्रेरणा दी।
   - ✓ **प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं की विशेषताएँ :** प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ क्लिष्ट योगात्मक थीं, जिनमें शब्दों में ध्वनि-तत्व जोड़कर अर्थ का विस्तार किया जाता था। वैदिक संस्कृत स्वर-प्रधान थी, जबकि लौकिक संस्कृत बल-प्रधान हो गई। वैदिक भाषा के रूप विविध थे, पर संस्कृत में रूप अधिक व्यवस्थित हो गए। वाक्य पदबंधों से निर्मित होते थे, जिनमें कर्ता और क्रिया के साथ अन्य पद जुड़े रहते थे। सभी शब्द धातु और प्रत्यय से निर्मित माने जाते थे। संस्कृत साहित्य की दो प्रमुख धाराएँ थीं – वैदिक साहित्य (श्रुति) और लौकिक साहित्य (काव्य, नाटक, दर्शन आदि)।
2. **मध्य भारतीय आर्य भाषाएँ (500 ई.पू. – 1000 ई.):** इस युग में प्राकृत, पाली और अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ।
   - ✓ मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं में **पालि, प्राकृत और अपभ्रंश** को रखा जाता है।
   - ✓ इनका समय 500 ई.पू. से 1000 ई. तक माना जाता है। इस काल को **प्राकृत काल** भी कहा गया है।
   - ✓ पालि से अपभ्रंश तक के समय को **प्रथम प्राकृत, द्वितीय प्राकृत और तृतीय प्राकृत** के रूप में भी विभाजित किया जाता है।
     - ▪ प्रथम प्राकृत के अन्तर्गत पालि और अशोक अभिलेखों की भाषा आती है।
     - ▪ द्वितीय प्राकृत में प्रादेशिक भिन्नताओं के कारण अलग-अलग प्राकृतें विकसित हुईं, जैसे – महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी।
     - ▪ तृतीय प्राकृत के अन्तर्गत अपभ्रंश भाषा आती है।

a. पालि

- ✓ पालि के विकास की सामग्री पालि साहित्य और अशोक के अभिलेखों से मिलती है। इसमें बौद्ध धर्म के थेरवाद सम्प्रदाय का साहित्य रचा गया। बुद्ध और महावीर ने धर्म का प्रचार संस्कृत के बजाय जनभाषाओं में किया, जिनमें पालि प्रमुख रही।
- ✓ पालि शब्द का अर्थ 'मूलपाठ' या 'बुद्धवचन' है। कुछ विद्वान मानते हैं कि यह संस्कृत के 'पंक्ति' शब्द से ध्वनि परिवर्तन द्वारा बना। चौथी–पाँचवीं शताब्दी में आचार्य बुद्धघोष की अट्ठकथाओं तथा लंका के 'दीपवंश' में इसका प्रयोग 'बुद्धवचन' के अर्थ में हुआ।
- ✓ पालि साहित्य को दो भागों में बाँटा जाता है – **पिटक साहित्य** (त्रिपिटक) और **अनुपिटक साहित्य**। त्रिपिटक तीन भागों में है – **सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक**, जिनमें बौद्ध धर्म की आधारभूत शिक्षाएँ संकलित हैं।
- ✓ अशोक शिलालेखों में पालि भाषा के प्रयोग का उद्देश्य यही था कि धर्म की शिक्षा सामान्य जनता तक पहुँचे।
- ✓ **पालि की प्रमुख विशेषताएँ**
  - ▪ पालि में तीन लिंग हैं, लेकिन केवल दो वचन हैं; द्विवचन नहीं मिलता।

- इसमें ह्रस्व 'ए' और 'ओ' स्वर मिलते हैं।
- विसर्ग का प्रयोग नहीं होता, उसके स्थान पर 'ओ' आता है।
- 'श' और 'ष' के स्थान पर 'स' का प्रयोग होता है।
- कुछ वैदिक ध्वनियाँ (क, ह) पालि में बची रहती हैं।
- धातुओं में परस्मैपद अधिक मिलता है, आत्मनेपद लुप्तप्राय है।
- कई संस्कृत ध्वनियों में परिवर्तन हुआ, जैसे नृत्य → निध्य, वृद्ध → बुद्धो।
- पालि में तद्भव शब्द अधिक हैं, तत्सम शब्द कम मिलते हैं।

b. प्राकृत

✓ प्राकृत का मूल संस्कृत है, किंतु यह संस्कृत का लोकभाषा-रूप था। जब संस्कृत शिष्ट जनों की भाषा बन गई, तब जनसामान्य में प्राकृत का प्रयोग होने लगा। जैन साहित्य प्राकृत में लिखा गया और धीरे-धीरे भारतवर्ष में प्राकृत का व्यापक साम्राज्य स्थापित हुआ।

✓ 'प्राकृत' शब्द का अर्थ है – प्रकृति से उत्पन्न भाषा, यानी सहज रूप से बोली जाने वाली भाषा। यह संस्कृत की तरह कृत्रिम नहीं थी। विद्वानों ने प्राकृत को **मध्य भारतीय आर्य भाषा** कहा है।

प्रमुख साहित्यिक प्राकृतें

- **शौरसेनी प्राकृत** – मथुरा क्षेत्र की भाषा थी, जो संस्कृत के निकट रही। संस्कृत नाटकों में स्त्रियाँ और विदूषक इसका प्रयोग करते थे। इसमें संस्कृत के 'त' का 'द', और 'थ' का 'ध' हो जाता है।
- **अर्धमागधी प्राकृत** – इसमें शौरसेनी और मागधी दोनों की विशेषताएँ थीं। जैन आचार्यों ने इसे 'आर्ची' या 'आदि भाषा' कहा। इसमें *श, ष* के स्थान पर *स* का प्रयोग और व्यंजन-लोप की प्रवृत्ति मिलती है।
- **मागधी प्राकृत** – मगध की भाषा थी। इसमें 'र' के स्थान पर 'ल' का प्रयोग मिलता है (राजा → लाजा)। इसमें 'स' और 'ज' की जगह 'श' आता है। संस्कृत नाटकों में निम्न श्रेणी के पात्र इसका प्रयोग करते थे।

c. अपभ्रंश

✓ 'अपभ्रंश' का अर्थ है 'अपभ्रष्ट' या 'बिगड़ी हुई भाषा'। इसके अन्य नाम हैं – अवहट्ट, आभीरी आदि। इसे उस समय बोलचाल की भाषा माना जाता था।

✓ पंतजलि के *महाभाष्य* में 'अपभ्रंश' का प्राचीनतम प्रयोग मिलता है। अपभ्रंश को **मध्यकालीन और आधुनिक आर्य भाषाओं के बीच की कड़ी** माना जाता है। पाँचवीं शताब्दी से इसमें काव्य-रचनाएँ मिलने लगीं।

✓ अपभ्रंश साहित्य का विकास **मालवा, गुजरात और राजस्थान** में हुआ। आचार्य हेमचन्द्र ने अपभ्रंश और ग्राम्य भाषा में भेद किया। राहुल सांकृत्यायन और रामचंद्र शुक्ल जैसे विद्वानों ने अपभ्रंश को हिंदी का प्राचीन रूप बताया है।

➢ अपभ्रंश का वाल्मिकी स्वयंभू को कहा जाता है।
➢ जब अपभ्रंश भाषा से हिन्दी भाषा का विकास हुआ तो आरम्भ में अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी का प्रयोग किया जाता था। इस अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी को अवहट्ठ के नाम से पुकारा जाता हैं।
➢ अवहट्ट भाषा को अपभ्रंश का अपभ्रंश या परवर्ती अपभ्रंश भी कहा जाता है।

अपभ्रंश की प्रमुख विशेषताएँ

➢ इस काल में भाषा विश्लेषणात्मक हो गई।
➢ बल-प्रधान प्रवृत्ति बढ़ी।
➢ अकारान्त पुल्लिंग शब्दों की प्रधानता रही।
➢ लिंग और वचन केवल दो ही पाए जाते हैं।
➢ दन्त रूपों का अधिक प्रयोग हुआ।
➢ आधुनिक हिंदी की ध्वनि, व्याकरण और शब्दकोश को समझने के लिए अपभ्रंश का अध्ययन आवश्यक है।

अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास

भारतीय आर्यभाषाओं के विकास में अपभ्रंशों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। विभिन्न अपभ्रंशों से आधुनिक भाषाएँ निम्न प्रकार विकसित हुईं—

1. **शौरसेनी अपभ्रंश** से पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती और पहाड़ी भाषाओं का विकास हुआ।
2. **पैशाची अपभ्रंश** से लहँदा और पंजाबी का विकास हुआ।
3. **ब्राचड़ अपभ्रंश** से सिन्धी भाषा का विकास हुआ।
4. **महाराष्ट्री अपभ्रंश** से मराठी भाषा का विकास हुआ।

5. **मागधी अपभ्रंश** से बिहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया भाषाओं का विकास हुआ।
6. **अर्द्धमागधी अपभ्रंश** से पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी) का विकास हुआ।

3. **आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ (1000 ई. – वर्तमान काल) :** इस काल से हिंदी तथा अन्य आधुनिक भाषाओं का रूप प्रकट हुआ।
   - ✓ अपभ्रंश काल में ही उन प्रवृत्तियों का आरम्भ हो गया था, जो आगे चलकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में विकसित हुईं। शब्द और धातु-रूपों में अपभ्रंश ने अपने नवीन प्रयोगों द्वारा हिंदी तथा अन्य आधुनिक भाषाओं की नींव रखी। अपभ्रंश का साहित्यिक क्षेत्र वही **मध्यदेश** था, जिसे हिंदी का उद्भव-स्थान माना जाता है। इसी कारण कई विद्वान अपभ्रंश को "पुरानी हिंदी" कहते हैं।
   - ✓ आधुनिक आर्य भाषाओं के उदय की सटीक सीमा निर्धारित करना कठिन है, क्योंकि संक्रमण-काल की भाषा-सामग्री कम उपलब्ध है। अनुमानतः **तेरहवीं से पंद्रहवीं शताब्दी** तक का समय संक्रमणकाल था, जब अपभ्रंश धीरे-धीरे आधुनिक भाषाओं में रूपांतरित हो रहा था।
   - ✓ सोलहवीं शताब्दी से आधुनिक आर्य भाषाओं में साहित्यिक कृतियाँ मिलने लगती हैं, जिनमें अपभ्रंश की विशेषताएँ नहीं दिखाई देतीं। अतः पंद्रहवीं शती तक भारतीय आर्य भाषाएँ आधुनिक रूप धारण कर चुकी थीं।
   - ✓ **मुख्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ**
     - सिंधी, गुजराती, लहंडा, पंजाबी, मराठी, उड़िया, बंगाली, असमिया, हिंदी (पश्चिमी व पूर्वी)।
     - इनके अतिरिक्त कश्मीरी भी एक प्रमुख भाषा है।
     - उर्दू को वस्तुतः हिंदी की अरबी-फारसी से प्रभावित शैली माना गया है।
     - राजस्थानी, पहाड़ी और बिहारी को विद्वान अलग रखते हैं, किंतु ये हिंदी क्षेत्र में आती हैं।
     - भारत से बाहर की आधुनिक आर्य भाषाएँ : नेपाली, सिन्धली, जिप्सी।
   - ✓ **भौगोलिक क्षेत्र**: आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का क्षेत्र संपूर्ण उत्तर भारत है। इसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र प्रमुख क्षेत्र हैं।
   - ✓ **उत्पत्ति (उदाहरण सहित)**
     - शौरसेनी → पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।
     - पैशाची → लहंडा, पंजाबी।
     - शौरसेनी-ब्राचड़ → सिंधी।
     - महाराष्ट्री → मराठी।
     - मागधी → बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया।
     - अर्धमागधी → पूर्वी हिंदी।
   - ✓ **आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण**
     1. **ग्रियर्सन का वर्गीकरण (लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया)**
        - **a. बाहरी उपशाखा**
          - ☞ उत्तरी-पश्चिमी समुदाय : लहंडा, सिंधी
          - ☞ दक्षिणी समुदाय : मराठी
          - ☞ पूर्वी समुदाय : उड़िया, बिहारी, बंगला, असमिया
        - **b. मध्य उपशाखा**
          - ☞ पूर्वी हिंदी
        - **c. भीतरी उपशाखा**
          - ☞ केन्द्रीय समुदाय : पश्चिमी हिंदी, पंजाबी, गुजराती, भीली, खानदेशी, राजस्थानी
          - ☞ पहाड़ी समुदाय : नेपाली (पूर्वी पहाड़ी), मध्य व पश्चिमी पहाड़ी
     2. **सुनीतिकुमार चटर्जी का वर्गीकरण**
        - उदीच्य (उत्तर-पश्चिमी) : सिंधी, लहंडा, पंजाबी
        - प्रतीच्य (पश्चिमी) : गुजराती
        - मध्यदेशीय : राजस्थानी, पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी, पहाड़ी
        - प्राच्य (पूर्वी) : उड़िया, बंगाली, असमी
        - दक्षिणात्य : मराठी
     3. **धीरेन्द्र वर्मा का वर्गीकरण (अधिक व्यवहारिक)**
        1. उत्तरी : सिंधी, लहंडा, पंजाबी
        2. पश्चिमी : गुजराती
        3. मध्यदेशीय : राजस्थानी, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, बिहारी, पहाड़ी
        4. पूर्वी : उड़िया, बंगला, असमिया
        5. दक्षिणी : मराठी

ToppersNotes Unleash the topper in you

खड़ी बोली

- **खड़ी बोली** शब्द का प्रयोग दिल्ली-मेरठ क्षेत्र की बोली के लिए किया जाता है। ग्रियर्सन ने इसे वर्नाक्युलर हिंदुस्तानी और सुनीतिकुमार चटर्जी ने जनपदीय हिंदुस्तानी कहा है। हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी का आधार यही बोली है।
- खड़ी बोली शब्द के विषय में मतभेद हैं।
  - ✓ आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इसे संस्कृत के विसर्गान्त शब्दों से उत्पन्न बताया (उदा. उषः → उषा)।
  - ✓ कुछ विद्वानों ने बोली की कठोरता के कारण इसे "खड़ी" कहा।
  - ✓ धीरेन्द्र वर्मा और विद्यालंकार ने इसे कर्कशता व कटुता से जोड़ा।
  - ✓ राहुल सांकृत्यायन ने इसे कोरवी कहा।
  - ✓ आज के साहित्यिक हिंदी की नींव खड़ी बोली पर है।
- **खड़ी बोली की विशेषताएँ**
  - ✓ आकारान्त प्रधान भाषा है : करता, गया, बड़ा।
  - ✓ ए, ओ का उच्चारण संवृत (बेठ, घेर, होर)।
  - ✓ ह के पहले अ का उच्चारण ए की तरह (केहा)।
  - ✓ ठेठ रूपों में न → ण, ल → ळ (जाणा, माळ)।
  - ✓ ऐ और औ मूल स्वर हो गए हैं।
  - ✓ क्रियाविश्लेषण में – अब, तब, जब, जिधर, इधर।
  - ✓ 'नहीं' के स्थान पर 'नई' रूप चलता है।
  - ✓ मूर्धन्य व्यंजनों का कम प्रयोग।
  - ✓ बोलचाल के ड, ढ → साहित्यिक ड, ढ।
  - ✓ इसी बोली के सुसंस्कृत रूप में आधुनिक हिंदी साहित्य लिखा जाता है।

ब्रजभाषा

- ब्रज शब्द का अर्थ है गौ-चारण क्षेत्र। इसका उद्भव शौरसेनी प्राकृत से हुआ। साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रज का प्रचार गुजरात से बंगाल तक रहा। सूरदास, बिहारी, भूषण आदि कवियों ने इसे अपनाया।
- **विशेषताएँ**
  - ✓ 12 स्वर ध्वनियाँ (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ आदि)।
  - ✓ खड़ी बोली के आ के स्थान पर ओ/आ (करता → करतो)।
  - ✓ 'ट्र' लिखा जाता है, उच्चारण 'रि'।
  - ✓ महाप्राण 'ह' का लोप (बारह → बारा)।
  - ✓ कहीं-कहीं नपुंसकलिंग रूप सुरक्षित।
  - ✓ भविष्यत् काल में सर्वनाम के साथ 'गौ' (मारौंगा)।
  - ✓ सर्वनाम भिन्न (मैं → हो, मुझे → मोहि)।

अवधी

- अवधी का विकास अर्धमागधी प्राकृत से हुआ। इसे कभी *कोसली* भी कहा जाता है। 14वीं शताब्दी में बुल्ला दाऊद की *चंदायन* अवधी का प्रथम महाकाव्य है। जायसी की *पद्मावत* और तुलसीदास की *रामचरितमानस* ने इसे उन्नति दी।
- अवधी का क्षेत्र : लखनऊ, फैजाबाद, रायबरेली, सीतापुर, सुल्तानपुर, प्रयागराज, मिर्जापुर आदि।
- **विशेषताएँ**
  - ✓ स्वरों की मात्रा कम।
  - ✓ श, ष → स (विश्राम → विस्राम)।
  - ✓ च → त्स्व (बरखा → बरसा)।
  - ✓ शब्दांत आ का उच्चारण (मीठा → मीठा:)।
  - ✓ ऐ, औ का उच्चारण अई, अउ (जइसे, अउरत)।
  - ✓ महाप्राण ध्वनियाँ स्पष्ट।
  - ✓ संज्ञा के तीन रूप – लघु, दीर्घ, दीर्घता।
  - ✓ कर्ता परसर्ग *ने* का अभाव।
  - ✓ व्यंजनांत संज्ञाओं में 'उ' की वृद्धि (मनु → मनु)
  - ✓ सहायक क्रिया 'है' की जगह 'अ'/'बाट' (वह बाटे)।

विविध अपभ्रंश भाषाओं से विकसित हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ

क्र.सं.	अपभ्रंश का नाम	विकसित उपभाषा / भाषा	विकसित बोलियाँ
1.	शौरसेनी अपभ्रंश	पश्चिमी हिन्दी	**आकार बहुला** : कोरवी (खड़ी बोली), हरियाणवी (बांगरू/मांडू), दक्खिनी **ओकार बहुला** : ब्रज (अन्तर्वेदी), बुंदेली (बुंदेलखण्डी), कन्नौजी
		राजस्थानी	मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, मालवी, मेवाती
		गुजराती	स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित

2.	अर्द्धमागधी अपभ्रंश	पूर्वी हिन्दी	अवधी (बैसबाड़ी), बघेली
3.	मागधी अपभ्रंश	बिहारी	भोजपुरी, मैथिली, मगही
		अन्य भाषाएँ	उड़िया, बांग्ला, असमिया, छत्तीसगढ़ी
4.	महाराष्ट्री अपभ्रंश	मराठी	देशी, कोंकणी, बरारी, नागपुरी
5.	ब्राचड़ अपभ्रंश	सिन्धी	–
6.	कैकेय / पैशाची अपभ्रंश	लहँदा, पंजाबी	–
7.	दरद अपभ्रंश	कश्मीरी	डोगरी, संथाली
8.	खस अपभ्रंश	पहाड़ी	**मध्यवर्ती पहाड़ी** : गढ़वाली, कुमायूँनी **पश्चिमी पहाड़ी** : नेपाली

हिन्दी की वास्तविक उपभाषाएँ और बोलियाँ

हिन्दी की कुल 05 उपभाषाएँ मानी जाती हैं, जिनसे मिलकर 18 बोलियाँ विकसित हुई हैं।

क्र.सं.	**उपभाषा**	**विकसित बोलियाँ**
1.	पश्चिमी हिन्दी	कोरवी, हरियाणवी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली
2.	राजस्थानी	मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, मालवी, मेवाती
3.	पूर्वी हिन्दी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
4.	बिहारी	भोजपुरी, मैथिली, मगही
5.	पहाड़ी हिन्दी	कुमायूँनी, गढ़वाली

Toppersnotes Unleash the topper in you

2
CHAPTER

वर्णमाला

- किसी भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसे छोटे भागों में और न तोड़ा जा सकता हों, ध्वनि कहलाती है, ध्वनि को वर्ण कहा जाता है। **वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला** कहा जाता है।
- हिंदी वर्णमाला में मूलत: कुल 44 वर्ण होते हैं जिन्हें 2 भागों में विभक्त गया है।

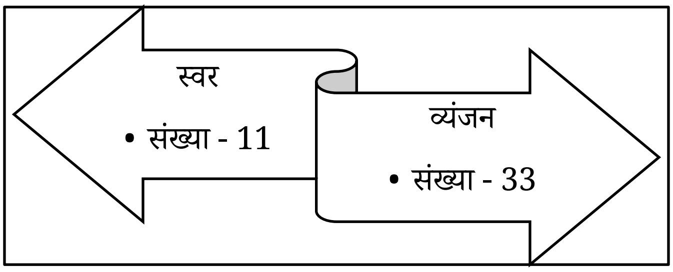

क्या आप जानते हैं?

वर्णों को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। वर्णों की संख्या कहीं 52 तो कहीं 44 मानी गयी है। सरकारी वर्णमाला में ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अत: वहाँ कुल वर्णों की संख्या 53-3 = 49 ही मानी गयी है।
सर्वमान्य मत - 44 वर्ण हैं। (11 स्वर तथा 33 व्यंजन)

वर्णों का वर्गीकरण

- **श्वास वायु के आधार पर**
  - **(i) अनुनासिक** – अनुनासिक वर्णों की ध्वनि में श्वास वायु मुख के साथ नाक से बाहर निकलती है। अनुनासिक वर्णों में चन्द्रबिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे – अँ, इँ, प्रत्येक वर्ग का पाँचवां वर्ण।
  - **(ii) अल्प प्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय वायु का कम प्रवाह होता है, अल्प प्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का 1, 3 व 5 वाँ वर्ण।
  - **(iii) महाप्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु का प्रवाह होता है, महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण।
- **स्वर तत्रों की स्थिति व कम्पन्न के आधार पर**
  - **(i) घोष/सघोष :-** घोष का शाब्दिक अर्थ है नाद या गूंज। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर तंत्र में कंपन (गूंज उत्पन्न होना) होता है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।
    घोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण घोष वर्ण कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं। इनकी कुल संख्या तीस है।
  - **(ii) अघोष :-** जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गूंज उत्पन्न नहीं होती वे वर्ण अघोष वर्ण कहलाते हैं।
    अघोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के पहले और दूसरे वर्ण अघोष वर्ण होते हैं, इनकी संख्या तेरह है।

स्वर

- ऐसी ध्वनियाँ अथवा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं।
- स्वर स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। **स्वर 11 होते हैं** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

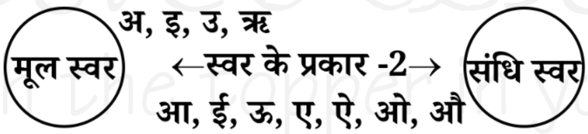

- **इन्हें मूलत: 3 भागों में बांटा जा सकता है।**
  - **(i) ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे उन्हें हस्व स्वर कहा जाता है। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। जैसे - अ, इ, उ।
  - **(ii) दीर्घ स्वर -** जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिला कर बनते हैं अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। जैसे – आ, ई, ऊ।
  - **(iii) प्लुत स्वर** – जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ सवा से भी अधिक समय लगता है वे प्लुत स्वर कहलाते हैं।

- **जिह्वा के आधार पर स्वर**
  - **(i) अग्र स्वर** –स्वर जिसमे जीभ का अग्र भाग प्रयोग में आता हैं । - इ, ई, ए, ऐ
  - **(ii) मध्य स्वर** – जिसमे जीभ का मध्य भाग प्रयोग में आता हैं। - अ
  - **(iii) पश्चस्वर** – जिसमे जीभ का पश्च भाग प्रयोग में आता हैं । - आ, उ, ऊ, ओ, औ

वर्ण	उच्चारण स्थान
अ, आ	कंठ
इ, ई	तालु
ऋ	मूर्धा
उ, ऊ	ओष्ठ
ए, ऐ	कंठ + तालव्य
ओ, औ	कंठ + ओष्ठ

महत्वपूर्ण तथ्य –

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्ठाध्यायी रचना में मिलता है।
- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है

- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है

समानाक्षर स्वर

- ✓ आ – अ + अ
- ✓ ई – इ + इ
- ✓ ऊ – उ + उ

संधि स्वर

- ✓ ए – अ + इ
- ✓ ऐ – अ + ए
- ✓ औ – अ + ओ

- अंग्रेज़ी से गृहित स्वर – ऑ (डॉक्टर, कॉलेज)

व्यंजन

- स्वरों की सहायता से बोली जाने वाली ध्वनियों को ही व्यंजन कहा जाता है।
- जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है।
- व्यंजन अस्वतंत्र एवं अपूर्ण होते हैं।
- व्यंजन को **मूलतः 3 भागों** में बांटा जा सकता है।

व्यंजन के मूलत: तीन प्रकार हैं

- **स्पर्श - संख्या : 25**
- **अंत:स्थ - संख्या : 4**
- **ऊष्म - संख्या : 4**

ToppersNotes
Unleash the topper in you

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को आठ भागों में बांटा गया है है:

1. **स्पर्शी** : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में फेफड़ों सद्वारा छोड़ी गयी वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करके बाहर निकलती है, स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे – क् ख् ग् घ्, ट्, ठ ड ढ़, त्, थ् ध, प् फ् ब् भ्
2. **संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण/संघर्ष करती हुई बाहर निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - श, ष्, स्, ह, ख्, ज, फ्
3. **स्पर्श संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - च्, छ, ज्, झ्।
4. **नासिक्य :** जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है। जैसे - ङ्, ञ, ण, न, म्।
5. **पार्श्विक :** जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और वायु पार्श्व आस-पास से निकल जाती है, वे पार्श्विक हैं - जैसे - 'ल्'।

6. **प्रकम्पित :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा दो-तीन बार कंपन करती है, वे प्रकंपित व्यंजन कहलाते हैं। जैसे- 'र'

7. **उत्क्षिप्त :** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक झटके से ऊपर उठकर नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त ध्वनि कहलाती है। जैसे - ड़, ढ़

8. **संघर्ष हीन :** जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष या अवरोध के बाहर निकलती है वे संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे-य, व। इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

वर्ग	**स्पर्श वर्ण**					**उच्चारण स्थान**
क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	दंत
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ
प्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
	अघोष	अघोष	सघोष	सघोष	सघोष	घोष

व्यंजन प्रकार	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**
अंत:स्थ व्यंजन	य	तालु
	र	दंत
	ल	दंत
	व	दंत + ओष्ठ
ऊष्म व्यंजन	श	तालु
	ष	मूर्धा
	स	दंत
	ह	कंठ

संयुक्त व्यंजन

➢ हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन होते हैं। ये दो व्यंजनों के मेल से बने होते हैं।

क्ष = क् + ष्
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ
श्र = श् + र् + अ

अयोगवाह

➢ वे वर्ण जो न तो स्वर होते है और न ही व्यंजन होते है उन्हें अयोगवाह (अं अः) कहा जाता है।

➢ अं को अनुस्वार (नाक), अँ को अनुनासिक (नाक मुख) और अः को विसर्ग (कंठ) कहा जाता है ।

वर्णों का उच्चारण स्थान

क्र. सं.	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**	**उच्चारण ध्वनि**
1	क वर्ग, अ, आ और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2	च वर्ग, इ, ई, य, श	तालु	तालव्य
3	ट वर्ग, ऋ, र, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
4	त वर्ग, लृ, ल, स	दन्त	दन्त्य
5	प वर्ग, उ, ऊ,	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6	अ, ङ, ञ, ण, न्, म्	नासिका	नासिक्य
7	ए ऐ	कंठ तालु	कंठ - तालव्य
8	ओ, औ	कंठ ओष्ठ	कठोष्ठ्य
9	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
10	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

महत्वपूर्ण तथ्य –

➢ हिंदी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिंदु) का प्रयोग किया जाता है जिन्हें आगत / गृहीत व्यंजन कहा जाता है।

- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है

  क़ – क़रीब

  ख़ – ख़राब

  ग़ – ग़म

  ज़ – ज़रा

  फ़ – फ़न (अंग्रेज़ी)
- नुक्ता / आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फ़ारसी, अंग्रेज़ी भाषा से हुआ है।
- नुक्ता व्यंजन की शुरुआत का श्रेय हिंदी विद्वान "विप्रसाद सितारे हिन्द" को जाता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

- हिंदी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अ: (विसर्ग) ध्वनियाँ हैं को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वर में जोड़ा जाता है न ही व्यंजन में
- अनुस्वार (अं) व विसर्ग (अ:) को अयोगवाह नाम देने का श्रेय किशोरी दास वाजपेयी को जाता है
- तालु उच्चारण स्थान पर आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है
- वर्त्स वर्णों में न, ल, स को शामिल किया गया है इनकी कुल संख्या 4 होती है
  1. जिह्वा
  2. अधरोष्ठ (नीचे का होठ)
  3. स्वर तंत्रियाँ
  4. कोमल तालु
- काकल वर्ण के अंतर्गत विसर्ग (:) को शामिल किया गया है
- **रकार / रेफ या र सम्बंधित नियम**

  (i) नियम 1: यदि र के बाद व्यंजन आए तो र को उसी व्यंजन वर्ण के के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजनवर्ण के ऊपर लिखा जाता है

  जैसे – कर्म, धर्म, स्वर्ग, पुनर्जन्म आदि

  (ii) नियम 2: यदि र से पहले व्यंजन वर्ण आये तो र को उसी व्यंजन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है

  जैसे – प्रकाश, भ्रष्ट, प्रभात, प्रेम, क्रम आदि
- **उत्क्षिप्त वर्ण का नियम**

  ✓ **नियम 1 :** यदि शब्द की शुरुआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

  जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया आदि

  ✓ **नियम 2:** यदि शब्द के अंतर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

  जैसे – पण्डित, बुड्ढा, खण्ड, मण्डल आदि

  नोट – उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिंदु आती है जैसे – लड़ाई, सड़क,पकड़ना, पढ़ाई आदि

Unleash the topper in you

25 CHAPTER

अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण

- यह अध्याय अंग्रेजी वर्णमाला (A–Z) पर आधारित प्रश्नों को सम्मिलित करता है। अभ्यर्थियों को सभी 26 अक्षरों के स्थानों तथा उनसे संबंधित मूलभूत अवधारणाओं का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।
- **अक्षरों के दो प्रकार होते हैं:**
  - ✓ स्वर (Vowels) – A, E, I, O, U (अंग्रेजी वर्णमाला में 5 स्वर होते हैं।)
  - ✓ व्यंजन (Consonants) – B, C, D, F, G, H, J, K, L, M, N, P, Q, R, S, T, V, W, X, Y, Z (अंग्रेजी वर्णमाला में 21 व्यंजन होते हैं)
- **वर्णमाला को दो भागों में विभाजित किया गया है:**
  - ✓ प्रथम भाग (First Half) – A से M (प्रथम भाग में 13 अक्षर होते हैं, अर्थात् स्थान 1 से 13 तक)
  - ✓ द्वितीय भाग (Second Half) – N से Z (द्वितीय भाग में 13 अक्षर होते हैं, अर्थात् स्थान 14 से 26 तक)

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

Short trick:

- **EJOTY (**इजोटी)

5	10	15	20	25
E	J	O	T	Y

- **CFILORUX** (सिफिलोरक्स)

3	6	9	12	15	18	21	24
C	F	I	L	O	R	U	X

- **दाईं ओर से अक्षरों का पता लगाने की प्रक्रिया को इस सूत्र का उपयोग करके सरल बनाया जा सकता है::**
  - ✓ बाएँ से स्थिति = 27 – दाएँ से स्थिति
- **विपरीत अक्षरों को याद रखने की Trick**

Pair	**AZ**	**BY**	**CX**	**DW**	**EV**	**FU**	**GT**
Trick	**AZ**	**BY**e	**C**racks	**D**e**W**	**EV**ening	**F**ew / **U**ff	**G.T.** Road

Pair	**HS**	**IR**	**JQ**	**KP**	**LO**	**MN**
Trick	**H**igh **S**chool	**I**ndian **R**ailway	**J**aipur **Q**ueen	**K**an**P**ur	**L**ife **O**K	**M**a**N**

Toppersnotes Unleash the topper in you

Type-1 अंग्रेजी वर्णमाला में अक्षर की स्थिति

> ➢ यदि समान दिशा में गिनती की जाए (left to left या right to right), तो दोनों स्थानों को घटाया जाता है।
> ➢ यदि विपरीत दिशा में गिनती की जाए (left to right या right to left), तो दोनों स्थानों को जोड़ा जाता है।

उदा:अंग्रेजी वर्णमाला में, बाएँ से 21वें अक्षर के बाएँ 10वाँ अक्षर कौन सा है?

हल: नियम के अनुसार: यदि समान दिशा में गिनती की जाए (left to left या right to right), तो दोनों स्थानों को घटाया जाता है।

English alphabet = 21 − 10 = 11वाँ अक्षर = K

उदा: अंग्रेजी वर्णमाला में, दाएँ से 11वें अक्षर के बाएँ 9वाँ अक्षर कौन सा है?

हल: इस प्रकार के प्रश्नों में पहले बाएँ से स्थान ज्ञात करते हैं, फिर 27 में से घटाते हैं।

Alphabet = 11 + 9 = बाएँ से 20वाँ

Original alphabet = 27 − 20 = 7वाँ अक्षर = G

Type-2 अक्षर युग्म (Letter Pairs) पर आधारित प्रश्न

- ➢ अक्षर युग्म आगे (forward) तथा पीछे (backward) दोनों दिशाओं में बनाए जा सकते हैं।
- ➢ एक ही शब्द से अनेक युग्म बनाए जा सकते हैं।
- ➢ किसी अक्षर के साथ एक युग्म बनाने के बाद, उसी अक्षर के साथ दूसरा युग्म भी बनाया जा सकता है, यदि उनके बीच की दूरी अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार समान हो।

उदा: शब्द 'COMBINE' में ऐसे कितने अक्षर युग्म हैं, जिनमें उनके बीच शब्द में जितने अक्षर हैं (आगे और पीछे दोनों दिशाओं में), उतने ही अक्षर उनके बीच अंग्रेजी वर्णमाला में भी हों?

हल: सबसे पहले, हम 'COMBINE' शब्द के अक्षरों की स्थिति अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार लिखेंगे, अर्थात् C को 3 लिखा जाएगा और O को 15 लिखा जाएगा, और इसी प्रकार आगे।

C	O	M	B	I	N	E
3	15	13	2	9	14	5

यहाँ हम देख सकते हैं कि केवल B और E एक युग्म बनाते हैं।

Type-3 अक्षर आधारित प्रश्न

उदा: यदि शब्द 'REPRESENTATIVE' के प्रथम और आठवें अक्षरों का स्थान बदल दिया जाए, फिर दूसरे और नौवें अक्षरों का, और इसी प्रकार आगे भी अदला-बदली की जाए, तो नई व्यवस्था में बाएँ से 6वें अक्षर के बाएँ 4वाँ अक्षर कौन सा होगा?

हल:

स्थान	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
मूल अक्षर	R	E	P	R	E	S	E	N	T	A	T	I	V	E
नया अक्षर	N	T	A	T	I	V	E	R	E	P	R	E	S	E

बाएँ से 6वें अक्षर के बाएँ 4वाँ अक्षर = 6 − 4 = 2वाँ = T

Type-4 अंग्रेजी शब्दों का क्रम

- ➢ अंग्रेजी शब्दों को वर्णक्रम या शब्दकोश क्रम (dictionary order) में व्यवस्थित करना शब्दों का क्रम कहलाता है।

उदा: निम्नलिखित शब्दों को अंग्रेजी शब्दकोश क्रम के अनुसार व्यवस्थित करें:

(A) Epitaxy (B) Episode

(C) Epigene (D) Epitome

(E) Epilogue

हल: शब्दकोश में प्रत्येक शब्द वर्णानुक्रम में व्यवस्थित होता है। साथ ही, प्रत्येक शब्द के अक्षर भी क्रम के अनुसार तुलना किए जाते हैं। अतः शब्दों को शब्दकोश क्रम में इस प्रकार व्यवस्थित किया जाएगा:

(C) Epigene (E) Epilogue (B) Episode

(A) Epitaxy (D) Epitome

अतः सही उत्तर है: (C), (E), (B), (A), (D)

Type-5 शब्दों का सार्थक तार्किक क्रम

उदा: अक्षरों K, E, D, H, I का उपयोग करते हुए, प्रत्येक अक्षर का केवल एक बार प्रयोग करके 5 अक्षरों के कितने सार्थक शब्द बनाए जा सकते हैं?

हल: दिए गए अक्षर:K, E, D, H, I

इन अक्षरों से बनने वाला सार्थक शब्द:

HIKED: लंबी दूरी तक चलना

अतः ऐसा केवल एक ही शब्द संभव है।

उदा: यदि "HALLOWEEN" शब्द के पहले, तीसरे, पाँचवें, छठे और आठवें अक्षरों का उपयोग करके एक पाँच-अक्षरीय सार्थक शब्द बनाया जा सकता है, तो नए बने शब्द का बाएँ से अंतिम अक्षर क्या होगा?

हल: "HALLOWEEN" शब्द के बाएँ से पहला, तीसरा, पांचवा , छठा और आठवा अक्षर क्रमशः H, L, O, W और E हैं। इन अक्षरों से बनने वाला एकमात्र सार्थक पाँच-अक्षरीय शब्द WHOLE है।

26
CHAPTER

संख्या और अक्षर श्रृंखला परीक्षण

- **श्रृंखला** एक व्यवस्थित संख्या या अक्षरों की व्यवस्था होती है जो एक परिभाषित समूह में होती है। प्रतियोगी परीक्षाओं में, संख्या, अक्षरों या दोनों का मिश्रण प्रस्तुत किया जाता है। श्रृंखला में एक स्थान खाली छोड़ा जाता है या गलत संख्या या अक्षर दिया जाता है। उम्मीदवारों से यह पूछा जाता है कि वे उस स्थान को सही विकल्प से भरें या गलत तत्व को पहचानें।

संख्या श्रृंखला के प्रश्नों को हल करने का एक स्पष्ट और संक्षिप्त तरीका

पैटर्न की पहचान करें: देखें कि क्या संख्या एक निश्चित मात्रा से बढ़ रही है या घट रही है (जोड़/घटाना) या फिर किसी निश्चित मात्रा से गुणा/भाग की जा रही है (गुणन/भाग)।

- **अंतर खोजें**:
  - ✓ यदि लगातार संख्याओं के बीच का अंतर समान है, तो यह एक अंकगणितीय श्रृंखला है (जैसे 2, 5, 8, 11)।
  - ✓ यदि दूसरा अंतर (अंतर का अंतर) समान है, तो यह द्वितीयक श्रृंखला है।
- **गुणन/भाग की जांच करें**: देखें कि क्या प्रत्येक संख्या को अगले नंबर तक पहुँचाने के लिए किसी निश्चित संख्या से गुणा या भाग किया जा रहा है (जैसे 3, 6, 12, 24, जहां हर संख्या को 2 से गुणा किया जा रहा है)।
- **विशेष श्रेणियों को पहचानें**:
  - ✓ **वर्गमूल**: 1, 4, 9, 16, ...
  - ✓ **घनमूल**: 1, 8, 27, ...
  - ✓ **फिबोनाकी**: प्रत्येक संख्या पिछले दो के योग के बराबर होती है (जैसे 0, 1, 1, 2, 3, 5)।
- **अनुपात की जांच करें**: यदि संख्याएँ एक निश्चित अनुपात से बढ़ रही हैं, तो यह एक ज्यामितीय श्रृंखला (Geometric Progression) है (जैसे 2, 4, 8, 16)।
- **विकल्पों का परीक्षण करें**: यदि विकल्प दिए गए हैं, तो देखें कि कौन सा विकल्प पहचाने गए पैटर्न का पालन करता है।

Type-1 बढ़ती क्रम में श्रृंखला

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

169, 196, 225, 256,_?

1. 289 2. 324

3. 441 4. 361

हल:

169 196 225 256 **289**

+27 +29 +31 +33

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

235, 271, ?, 349, 391, 435

1. 311 2. 307 3. 313 4. 309

हल:

235 271 **309** 349 391 435

+36 +38 +40 +42 +44

+2 +2 +2 +2

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

55, 47, 74, 10, 135, -81, 262, ?

1. 774 2. -250 3. 343 4. -343

हल:

55 47 74 10 135 -81 262 **250**

-8 +27 -64 +125 -216 +343 -512

2^3 3^3 4^3 5^3 6^3 7^3 8^3

Unleash the topper in you

उदा: निम्नलिखित श्रृंखला में लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए:

121, 337,?, 1321, 2185

1. 713 2. 720 3. 721 4. 737

हल:

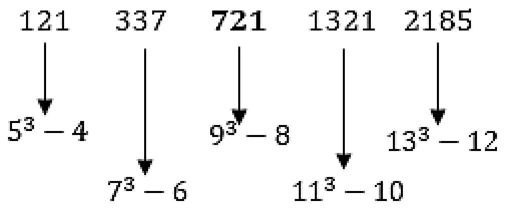

Type-2 गुणा आधारित बढ़ती श्रृंखला

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

19, 19, 38, 114, ?, 2280

1. 344 2. 1140

3. 456 4. 224

हल:

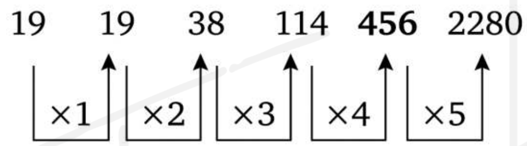

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

1, 9, 65, 457, ?

1. 4258 2. 3125

3. 3201 4. 5289

हल:

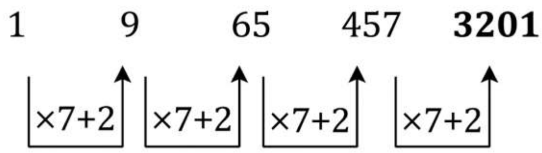

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

1, 24, 58, 125, 247, 446, ?

1. 774 2. 747

3. 744 4. 777

हल:

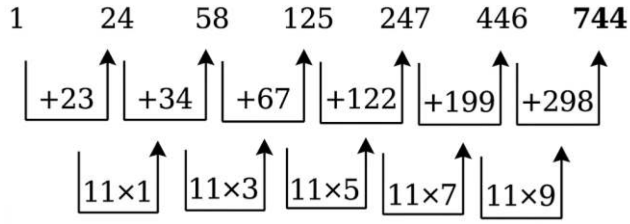

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

11, 19, 59, 115, 347, ?

1. 697 2. 619

3. 679 4. 691

हल:

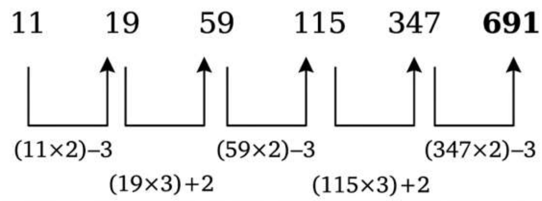

Type-3 जोड़ और घटाव आधारित श्रृंखला

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

137, 114, ?, 91, 183

1. 145 2. 160

3. 125 4. 112

हल:

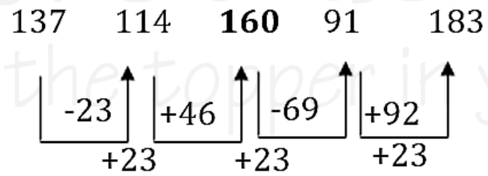

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

8, 13, 21, 34, 55, ?

1. 74 2. 68 3. 72 4. 89

हल:

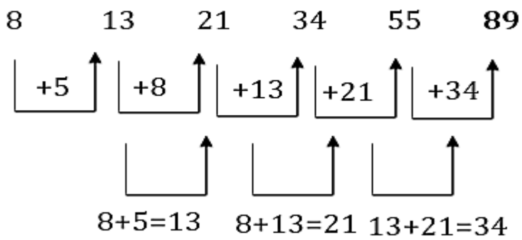

Type-4 वर्ग और घन आधारित श्रृंखला

उदा: श्रृंखला का अगला पद ज्ञात कीजिए:

0, 6, 24, 60, 120, ?

1. 180　　2. 210　　3. 216　　4. 240

हल:

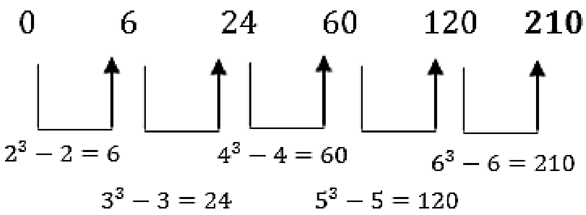

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

89, 90, 82, 109, 45, ?

हल:

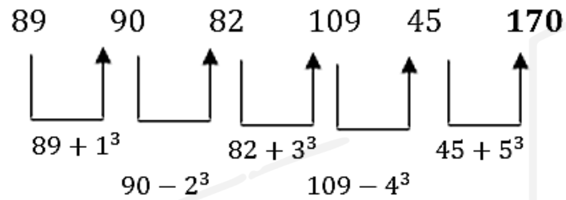

उदा: दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या आएगी?

28, 32, 41, 57, 82, ?

हल:

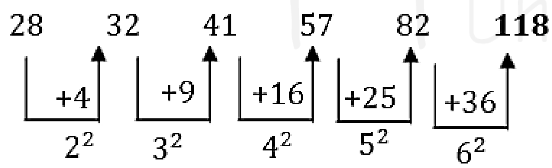

Type-5 भाग पर आधारित घटती हुई श्रृंखला

उदा: निम्नलिखित संख्या श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर कौन सी संख्या आएगी?

168, 168, 84, 28, ?

हल:

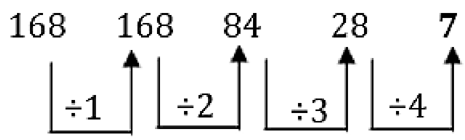

उदा: निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर कौन सी संख्या आएगी?

2430, ?, 270, 90, 30, 10

हल:

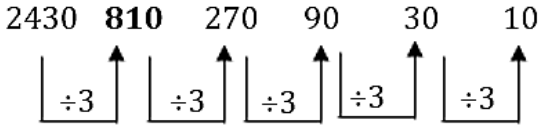

Type-6 मिश्रित संख्या श्रृंखला

उदा:अगला पर ज्ञात कीजिए　11,13,17,19, 23,_?

1. 27　　2. 29

3. 31　　4. 33

Ans:

11→ अभाज्य संख्या　　13→ अभाज्य संख्या

17→ अभाज्य संख्या　　19→ अभाज्य संख्या

23→ अभाज्य संख्या　　अगली अभाज्य संख्या= 29

उदा: नीचे दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर क्या आएगा?

77, 49, 36, 18, ?

1. 10　2. 12

3. 8　4. 16

हल:

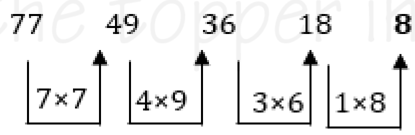

उदा: नीचे दी गई श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) के स्थान पर क्या आएगा?

3, 15, 5, 35, 7, 63, ?

1. 10　　2. 126

3. 9　　4. 84

हल: